यह है दुःख और सुख ,हारऔरजीत का खेल
लिबरेटर बाप आकर दुःखों से लिबरेट करते
राजाई पद पाना तो करनी पवित्रता धारण
पवित्रता की निशानी है लाइट का ताज़
आत्मा और शरीर दोनों जब हो पवित्र
तब देवता बनने से मिलता ताज़
अपनी चलन बड़ी रॉयल रखनी
मुख से कड़ुवे वचन नही बोलने
कमल पुष्प समान पवित्र बनना
मैं और मेरापन को करना समाप्त
इसका त्याग ही है सूक्ष्म त्याग
मैं पन के अश्व को अश्वमेध यज्ञ में करना स्वाहा
तब ही समानता और सम्पूर्णता का बजेगा
नगाड़ा
हाँ जी के सहयोग का हाथ बढ़ाना
अर्थात दुआओं के मालायें पहनना

ॐ शांति!!!
मेरा बाबा!!!